भाषा संबंधी अशुद्धियाँ
आज एक गंभीर समस्या एवं चुनौती

चित्ररेखा*
मनोज कुमार**

भाषा न केवल अभिव्यक्ति का साधन है, बल्कि यह एक-दूसरे के साथ संचार करने का सशक्त औज़ार एवं माध्यम भी है। वर्तमान समय में भाषा को लेकर जो एक गंभीर समस्या हमारे सामने आ रही है वह है भाषागत अशुद्धियाँ। यह समस्या किसी एक विद्यालय के विद्यार्थियों में ही नहीं पाई जाती, अपितु सभी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कम या ज़्यादा पाई जाती है चाहे वह विद्यालय निजी हो या सरकारी, शहरी क्षेत्र में स्थित हो या फिर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित हो। यह बड़ी विडंबना की बात है कि आज हिंदी माध्यम से पढ़े अधिकांश विद्यार्थी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के बावजूद सही हिंदी पढ़, लिख और बोल नहीं पाते और अंग्रेज़ी माध्यम से पढ़े अधिकांश विद्यार्थी सही अंग्रेज़ी लिख और बोल नहीं पाते। यह समस्या केवल इन दो भाषाओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यही समस्या अन्य भाषाओं को लेकर भी है। इस समस्या से न केवल हमारी वर्तमान पीढ़ी के विद्यार्थी प्रभावित हैं, बल्कि हमारी भावी पीढ़ी में भी इसके हस्तांतरण होने की पूरी संभावना है। इस लेख का उद्देश्य सेवाकालीन अध्यापकों, विद्यार्थी-शिक्षकों और विद्यार्थियों को भाषागत अशुद्धियों/त्रुटियों से अवगत कराना है ताकि वे भाषागत अशुद्धियों के कारणों व परिणामों को जानकर उनका उपयुक्त उपचार कर सकें।

(अ) बोलते व पढ़ते समय की गई अशुद्धियाँ

(ब) लिखते समय की गई अशुद्धियाँ

बोलते, पढ़ते व लिखते समय की गई अशुद्धियाँ, जैसे—

1. गलत उच्चारण करना व उन्हें गलत लिखना जैसे—

- चालू शब्द को चल्लू बोलना व लिखना;
- होगा शब्द को होग्गा बोलना व लिखना;
- थैली शब्द को थेली बोलना व लिखना;
- नील को लील बोलना व लिखना;
- डुबाना को डबोना बोलना व लिखना;
- मैं को में बोलना व लिखना; और
- है को हे बोलना व लिखना।

2. गलत शब्दों का प्रयोग करना व लिखना, जैसे—

- दीवार शब्द के स्थान पर दीवाल शब्द का प्रयोग करना;

* *प्रवक्ता*, ज़िला संसाधन इकाई, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, घुम्मनहेड़ा, दिल्ली 73
** *टी.जी.टी.* सोशल साईंस, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, मोती बाग-1, नयी दिल्ली 21

- छेद शब्द के स्थान पर छेक शब्द का प्रयोग करना; और
- शुरू शब्द के स्थान पर शुरु शब्द का प्रयोग करना आदि।

3. बोलते व लिखते समय वर्णों में भेद न करना जैसे— ज व झ में अंतर न करना। इसी प्रकार, ब-व, द-ध्, श-ष-क्ष आदि में अंतर न करना।
4. गलत मात्रा का उच्चारण करना व लिखना जैसे— अ स्वर को आ पढ़ना। छोटी इ के स्थान पर बड़ी ई का प्रयोग करना या इसका विपरीत करना। इसी प्रकार, उ की मात्रा के स्थान पर बड़े ऊ की मात्रा का प्रयोग करना आदि।
5. बोलते समय लिंग में भेद न करना, जैसे— स्त्री लिंग के स्थान पर पुल्लिंग का प्रयोग करना, और उसी के अनुसार क्रिया का प्रयोग करना जैसे— शीला घर जाएगा।
6. शब्दों को सही क्रमानुसार न लिखना (क्रम) संबंधी त्रुटियाँ, जैसे— राम घर पर गया है के स्थान पर राम गया है घर पर बोलना।
7. शब्दों के अर्थ संबंधी त्रुटियाँ करना (द्विअर्थी होना) जैसे— दवाई पीली है। यहाँ पहले वाक्य में दवाई के रंग की बात की गई है, जबकि दूसरे वाक्य में दवाई पीने अर्थात् क्रिया की बात की गई है।
8. कारक चिह्नों का गलत प्रयोग करना, जैसे— राम मंदिर में गया के स्थान पर राम मंदिर गया।
9. बोलते व लिखते समय विराम चिह्नों का सही से प्रयोग न करना। इसी प्रकार अन्य और भी ऐसी बहुत-सी गलतियाँ हैं जो जाने या अनजाने में हम अपने दैनिक जीवन में निरंतर बोलते हुए व लिखते हुए करते हैं, जैसे — अनुस्वार एवं अनुनासिक का गलत प्रयोग करना आदि।

भाषागत अशुद्धियों के कारण

अब प्रश्न यह खड़ा होता है कि ये भाषागत त्रुटियाँ किन कारणों से विद्यार्थी सीखते हैं, क्या विद्यार्थी इसके लिए स्वयं ज़िम्मेदार हैं? यदि ज़िम्मेदार हैं तो किस सीमा तक? और यदि नहीं तो वे कौन से अन्य कारण हैं जो इन भाषागत अशुद्धियों के लिए उत्तरदायी हैं। एक ज़िम्मेदार अध्यापक व अध्यापिका के लिए इन कारणों को जानना व इन पर शोध करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि वह इन कारणों को जानकर इनका उपचार कर सके।

भाषा के संबंध में सबसे मुख्य बात यह जानना है कि कोई भी भाषा सबसे पहले कैसे सीखी जाती है अर्थात् किसी भी भाषा को सीखने और उसे अभिव्यक्त करने की प्रारंभिक प्रक्रिया क्या होती है? कोई भी भाषा प्रायः इस प्रकार से सीखी जाती है—

- सुनकर
- बोलकर व
- पढ़कर

इसी प्रकार, किसी भी भाषा को प्रायः दो प्रकार से अभिव्यक्त किया जा सकता है—

- बोलकर व
- लिखकर

किसी भी भाषा को सीखने का क्रम प्राय: इस प्रकार से होता है—

- सुनना
- बोलना
- पढ़ना
- लिखना

इन्हें हम चार भाषाई कौशल कहते हैं। किसी भी भाषा को सीखने में सुनने अर्थात् श्रवण कौशल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि किसी भी विद्यार्थी के श्रवण अंग (कान) में विकार है, उसे ऊँचा सुनाई देता है या कम सुनाई देता है या सुनाई ही नहीं देता, तब उनमें भाषाई विकार उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इसके अलावा, अन्य और भी कारण हैं जो भाषाई विकार के लिए उत्तरदायी हैं, जैसे —

- भाषागत अंगों का विकास न होना,
- जीभ, दाँत, गले आदि में विकार होना,
- दिमागी रूप से बीमार होना,
- जानबूझकर गलत भाषा का प्रयोग करना,
- तुतलाना, हकलाना,
- द्विभाषा का प्रयोग करना, एवं
- अशुद्ध उच्चारण करना।

दूसरों से सीखी जाने वाली भाषागत अशुद्धियाँ (सुनकर व पढ़कर सीखी जाने वाली भाषागत अशुद्धियाँ)

कोई भी भाषा हमेशा सबसे पहले सुनकर सीखी जाती है। इसलिए किसी भी भाषा को सीखने में सुनने अर्थात् श्रवण कौशल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, अब प्रश्न यह उठता है कि विद्यार्थी किन-किन व्यक्तियों के संपर्क में आता है और कहाँ-कहाँ से भाषा सीखता है। भाषा सिखाने के लिए जो-जो कारक उत्तरदायी हैं, वे ही काफ़ी हद तक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाषागत अशुद्धियों के लिए भी उत्तरदायी हो सकते हैं।

घर एवं परिवार के सदस्यों द्वारा बोली जाने वाली भाषा

एक बालक जब जन्म लेता है, तो सर्वप्रथम वह अपने माता-पिता के सबसे निकट होता है। वह अपनी सबसे पहली भाषा अपने माता-पिता एवं परिवार के सदस्यों से अपने परिवार में ही सीखता है। प्राय: यह देखा गया है कि घर एवं परिवार में सभी सदस्य भाषा को बहुत तोड़-मरोड़कर अपनी सुविधानुसार प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए — एक परिवार में बालक की माता हिंदी, बालक के पिता अंग्रेज़ी, बालक की दादी मराठी बोलती है। बालक इन तीनों लोगों के संपर्क में अधिक समय व्यतीत करता है और इन तीनों की भाषा सुनता है, तब उनकी भाषाओं का प्रभाव बालक के भाषा सीखने पर पड़ता है और परिणामस्वरूप बालक किसी भी एक भाषा को सही प्रकार से सीख नहीं पाता। इसी प्रकार, घर पर बोली जाने वाली भाषा और विद्यालय में पढ़ाई जानी वाली भाषा में काफ़ी अंतर होता है, जिसके कारण विद्यार्थी असमंजस में आ जाता है कि कौन-सी भाषा सही है और कौन-सी गलत और वह किसी भी भाषा को सही प्रकार से सीखने में अपने आप को असमर्थ पाता है।

आस-पास या पड़ोस में बोली जाने वाली भाषा

विद्यार्थी अपने आस-पास के परिवेश में रहने वाले लोगों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, औपचारिक और अनौपचारिक रूप से सीखते हैं। समाज के अन्य व्यक्तियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषागत

अशुद्धियों के कारण भी विद्यार्थी की भाषा में भी भाषागत अशुद्धियाँ होने की संभावना होती है।

मित्र-मंडली

प्राय: यह देखा जाता है कि विद्यार्थियों की भाषा पर उनके मित्रों की भाषा का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि भाषागत अशुद्धियों वाले मित्र एक साथ इकट्ठे हो जाते हैं तो वे बहुत जल्दी से एक-दूसरे से भाषागत त्रुटियों को ग्रहण कर लेते हैं।

प्रादेशिक एवं क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव

यह कहा जाता है कि हमारे देश में प्रायः हर दस कोस पर पानी व भाषा बदलती रहती है, इसलिए हमारे देश में भिन्न-भिन्न भाषाएँ पाई जाती हैं। इन भिन्न-भिन्न भाषाओं के संपर्क में रहने के कारण बहुभाषाओं का आपस में विलय हो जाता है। जिसका प्रभाव भाषा के सही अधिगम पर पड़ सकता है।

अध्यापकों व अध्यापिकाओं द्वारा बोली जाने वाली भाषा व उनकी अध्यापन प्रणाली

विद्यार्थी की कुछ भाषागत त्रुटियाँ अध्यापकों की देन हो सकती हैं, जैसे—कई बार अध्यापक स्वयं भी लिखते और बोलते समय अपनी भाषागत त्रुटियों पर ध्यान नहीं देते और कई बार विद्यार्थियों की अभ्यास पुस्तिका व उत्तर पुस्तिका जाँचते समय उनकी भाषागत त्रुटियों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। जिससे विद्यार्थियों को उनके द्वारा की गई गलती पता ही नहीं चल पाती और अज्ञानवश वे उन गलतियों की पुनरावृति करते रहते हैं। अध्यापक की अध्यापन प्रणाली भी विद्यार्थियों की भाषा शैली को प्रभावित कर सकती है।

अध्यापकों व अध्यापिकाओं द्वारा अभ्यास पुस्तिका/उत्तर पुस्तिका जाँचते समय अर्थबोध को अधिक महत्व देना व अशुद्धियों को नज़रअंदाज़ करते हुए आकलन व मूल्यांकन करना भी काफ़ी हद तक भाषागत अशुद्धियों को बढ़ावा दे सकता है।

मीडिया में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा व अशुद्ध प्रिंटिंग

विद्यार्थियों को भाषा अधिगम करने में मीडिया भी बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। बहुत सारे चलचित्रों में, पत्रिकाओं व किताबों में लिखे गए प्रसंगों में, समाचार-पत्रों में एवं मोबाइल और इंटरनेट पर होने वाली भाषागत अशुद्धियाँ भाषागत त्रुटियों को बढ़ावा देती हैं।

दिखावट/अनुकरण

दूसरे लोगों के साथ होड़ भी भाषागत अशुद्धियों को पनपने में मदद करती है, जैसे — आजकल का विद्यार्थी दूसरे लोगों की भाषा शैली को अपनाने की कोशिश करता है, परंतु पर्याप्त ज्ञान न होने के कारण वह भाषागत त्रुटियों में लिप्त हो जाता है।

कई भाषाओं को सीखने की होड़

आज के वर्तमान समय में मानव अपने तक ही सीमित नहीं है, उसे अन्य व्यक्तियों के संपर्क में भी आना पड़ता है और इस बात में निस्संदेह कोई संकोच नहीं है कि यदि आप दूसरे लोगों के साथ संचार करना चाहते हैं तो आपको उनकी भाषा आनी चाहिए अन्यथा आप उनसे अलग-थलग पड़ जाएँगे। इसलिए यह कहना अनुचित न होगा कि बहुभाषी होना आज के समय की माँग है। परंतु

बहुभाषा सीखने के कारण जहाँ एक तरफ़ हम लोगों के निकटतम आते हैं, वहीं दूसरी तरफ़ बहुभाषी होने के कारण हमारी अपनी मूल भाषा पर पकड़ कम होने की संभावना बनी रहती है।

भाषागत अशुद्धियों के परिणाम

भाषा संचार करने का एक माध्यम है और प्रभावी संचार के लिए यह आवश्यक है कि संचार सही अर्थानुसार एवं सही भाषा में प्रस्तुत किया जाए अर्थात् संदेश पहुँचाने वाला जिस अर्थ में संदेश भेजना चाहता है, संदेश पाने वाला भी उसे उसी अर्थ में समझे। वह भ्रम पैदा करने वाला न हो, जैसे — क्या तुम अपनी बहन को खिलाते हो? इस प्रश्न में यह स्प्ष्ट नहीं है कि यहाँ पर खाने कि बात की गई है या किसी खेल की बात की गई है।

व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है

भाषागत अशुद्धियों को यदि समय रहते सुधार लिया जाए तो अच्छा रहता है, वरना इन भाषागत अशुद्धियों के लिए भविष्य में हमें शर्मिंदा होना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव हमारे व्यक्तित्व पर पड़ता है और आत्मविश्वास में भी कमी आती है। क्योंकि यदि छोटा बच्चा भाषागत अशुद्धियाँ करे तो उसे नज़रअंदाज़ किया जा सकता है, परंतु जब एक बड़ा व्यक्ति भाषागत अशुद्धियाँ करता है, तो वह उपहास का पात्र बन जाता है। जिसके कारण उसे शर्मिंदगी उठानी पड़ती है और उसके आत्मसम्मान को ठेस लगती है।

शिक्षा की गुणवत्ता में कमी आती है

भाषागत अशुद्धियाँ हस्तांतरणीय हैं अर्थात् ये एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती हैं। यह बात एक अध्यापक के सदंर्भ में बड़ी सटीक लगती है, क्योंकि अध्यापक अपने जीवनकाल में सैकड़ों विद्यार्थियों को पढ़ाता है और पढ़ाते व लिखते समय यदि वह भाषागत अशुद्धियाँ करता है, तो उसका प्रभाव काफ़ी बड़े स्तर पर विद्यार्थियों पर पड़ सकता है। यदि इन विद्यार्थियों की गलतियों में सुधार नहीं किया जाता है तो ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित हो सकती हैं, जिससे लगातार शिक्षा के स्तर में कमी आएगी। जिसके कारण हमारी शिक्षा प्रणाली के लिए एक भयावह स्थिति होगी।

उपाय

प्राथमिक व प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों को अन्य विषयों की तुलना में भाषाओं को अच्छी प्रकार से बोलने, लिखने व पढ़ने पर अधिक ज़ोर दिया जाना चाहिए, जिससे कि वे भाषा में अच्छी प्रकार से दक्ष हो सकें और इसके लिए पर्याप्त उपाय किए जाने चाहिए। भाषा को सही प्रकार से बोलने, पढ़ने व लिखने का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है, चाहे वह भाषा कोई भी क्यों न हो। कई भाषाओं को सीखने व सिखाने की होड़ में विद्यार्थी किसी भी भाषा पर अपनी सही पकड़ नहीं बना पाता और वह फिर उस कहावत कि तरह हो जाता है कि "कौआ चला हंस की चाल" और वह अपनी चाल भी खो बैठता है। इसलिए प्राथमिक स्तर तक विद्यार्थी को भाषा अच्छी प्रकार से सिखाई जानी चाहिए, जैसे — हिंदी माध्यम वाले विद्यार्थी को हिंदी व अंग्रेज़ी माध्यम वाले विद्यार्थी को अंग्रेज़ी सिखानी चाहिए, जिससे कि वह अन्य विषयों को भी आसानी से पढ़ना सीख जाए।

श्रुतलेख

भाषा को अशुद्धि रहित सिखाने का सबसे अच्छा तरीका है, श्रुतलेख। प्रारंभिक स्तर पर श्रुतलेख का विशेष महत्व है। इसलिए इस स्तर पर श्रुतलेख अधिक-से-अधिक होना चाहिए, जिससे कि विद्यार्थियों को शुरुआत में ही उनकी भाषागत अशुद्धियों की जानकारी हो जाए। शुद्ध उच्चारण व पढ़ने पर अधिक ज़ोर दिया जाना चाहिए तथा इसके लिए उचित पुनर्बलन प्रदान करना चाहिए।

क्रियात्मक शोध करना

भाषागत अशुद्धियों को जानने व उन्हें हल करने का सबसे अच्छा उपाय है, क्रियात्मक शोध करना। क्रियात्मक शोध द्वारा अध्यापक ज्ञात कर सकते हैं कि विद्यार्थी किस प्रकार की भाषागत अशुद्धियाँ कर रहे हैं। इन भाषागत अशुद्धियों को करने के मूल कारण कौन-कौन से हैं, व इन भाषागत अशुद्धियों को दूर करने के उपयुक्त उपाय कौन-कौन से हो सकते हैं। इस आधार पर वे अपनी कार्यनीति बना सकते हैं।

अर्थबोध के साथ-साथ भाषागत अशुद्धियों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए

अर्थबोध के आधार पर विद्यार्थी द्वारा लिखे गए वाक्यों को सही करते समय उन्हें भाषागत अशुद्धियाँ भी बताई जानी चाहिए, किसी भी परिस्थिति में उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए जो कि अकसर किया जाता है, जैसे—यदि विद्यार्थी से प्रश्न-पत्र में प्रश्न पूछा जाता है कि घोड़ा क्या खाता है? और विद्यार्थी उत्तर लिखता है कि धोड़ा धास खाता है। इस वाक्य में ध्यान देने योग्य बात यह है कि यदि हम अर्थबोध की दृष्टि से देखें तो यह वाक्य बिलकुल सही है, परंतु वर्तनी की दृष्टि से देखें तो यह वाक्य बिलकुल सही नहीं है। यहाँ पर यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थी को उसकी गलती का आभास कराकर उसकी गलती में सुधार किया जाए ताकि भविष्य में वह दोबारा इन गलतियों को न दोहरा पाए।

मूल्यांकन एवं आकलन

मूल्यांकन एवं आकलन करते समय भाषागत अशुद्धियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। चाहे वह मूल्यांकन एवं आकलन अंक प्रणाली के अनुसार या ग्रेडिंग प्रणाली के अनुसार क्यों न हो। इसके अलावा भाषागत अशुद्धियों को केवल भाषा विषय तक ही सीमित न रखा जाए, बल्कि अन्य विषयों में भी भाषागत अशुद्धियों पर ध्यान जाना चाहिए।

दायित्व

भाषा को सही व शुद्ध करने का दायित्व केवल भाषा अध्यापकों का ही न हो, बल्कि यह दायित्व सामूहिक रूप से सभी अध्यापकों का होना चाहिए।

प्रतियोगिता

भाषा प्रतियोगिता का आयोजन करना व कहानी, कविता, निबंध, नाटक लेखन व मंचन को प्रोत्साहन देकर भी भाषागत अशुद्धियों को कम किया जा सकता है।

अध्यापकों की नियुक्ति

प्रारंभिक स्तर पर उन अध्यापकों व अध्यापिकाओं की नियुक्ति की जानी चाहिए जिनकी भाषा पर अच्छी पकड़ हो, जो भाषागत अशुद्धियाँ न करते हों तथा जिन्हें भाषागत त्रुटियों का ज्ञान हो।

भाषागत परीक्षा

प्रारंभिक स्तर पर पढ़ाने वाले सेवाकालीन अध्यापकों के लिए व भावी अध्यापकों की नियुक्ति करते समय भाषागत परीक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। क्योंकि किसी भी भाषा को सीखने की नींव सही मायने में प्रारंभिक स्तर से ही शुरू होती है। इस अवस्था में बच्चे का स्वयं का अपना कोई शब्दकोश होता है। वह सबसे पहले भाषा अपने परिवार में अपने माता-पिता से सीखता है। तत्पश्चात् पड़ोस व अन्य समाज के लोगों से सीखता है, परंतु शुद्ध भाषा का ज्ञान वह अपने अध्यापकों या अध्यापिकाओं से विद्यालय में ही प्राप्त करता है।

निष्कर्ष

एक अध्यापक भविष्य के लिए न केवल नए नागरिक तैयार करता है, बल्कि डॉक्टर, इंजीनियर, प्रबंधक, अध्यापक, प्रवक्ता, वैज्ञानिक आदि सभी तैयार करता है, जो अलग-अलग क्षेत्रों में अपना-अपना योगदान देते हैं। इस प्रकार, एक अध्यापक अपने जीवन काल में सैकड़ों विद्यार्थियों को समाज निर्माण में अपना योगदान देने के लिए तैयार करता है। जहाँ अध्यापक एक सभ्य समाज का निर्माता है, उसके द्वारा की गई कोई छोटी या बड़ी गलती का प्रभाव समाज पर पड़ना स्वाभाविक है। इसलिए अध्यापकों व अध्यापिकाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में निपुण हों और अपने विषय पर न केवल उनकी पकड़ हो, बल्कि उन्हें भाषा का उचित ज्ञान भी हो। वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि बाहरवीं कक्षा पास करने के उपरांत भी विद्यार्थी की किसी एक भाषा पर पकड़ नहीं है। वह लिखते और बोलते समय कई गलतियाँ करते हैं। जिन्हें हम नज़रअंदाज़ करते चले जाते हैं या फिर ये सोचते हैं कि बड़े होने पर विद्यार्थी स्वयं सीख जाएँगे या फिर ये सोचते हैं कि यह कार्य हमारा नहीं है, यह तो केवल भाषा सिखाने वाले अध्यापकों का है। जिसके कारण अधिकतर विद्यार्थी लगातार लिखते और बोलते समय भाषागत अशुद्धियाँ कर रहे हैं। उन्हें वर्णों, मात्राओं, शब्दों में भेद करना नहीं आता, वे शब्दों एवं वाक्यों को उचित क्रम में नहीं लिख सकते। इस प्रकार यह बड़ी गंभीर समस्या है। परंतु यह समस्या तब और भी अधिक गंभीर हो जाती है, जब इनमें से कुछ विद्यार्थी आगे चलकर अध्यापन का व्यवसाय चुनकर अध्यापक बन जाते हैं और इन भाषा संबंधी अशुद्धियों को भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं।

भाषागत अशुद्धियों के गंभीर परिणामों को देखते हुए इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि भाषागत अशुद्धियों का उपचार करना सभी विद्यार्थियों व समाज के हित के लिए महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। भाषागत अशुद्धियों में सुधार लाने के लिए अध्यापकों द्वारा लेख में दी गई उपचार तकनीकों/उपायों को प्रयोग में लाया जा सकता है। भाषागत अशुद्धियों के प्रबंधन हेतु अध्यापक, माता-पिता और परामर्शदाता को उचित प्रयास करने चाहिए। उन्हें मिलकर विद्यार्थी की ओर मित्रवत व रचनात्मक तरीके से उसका ध्यान आकर्षित करना चाहिए तथा विद्यार्थी को यह समझने में सहायता करनी चाहिए कि वे किस प्रकार से इन सब भाषागत अशुद्धियों से छुटकारा पा सकते हैं। विद्यार्थियों के प्रति अध्यापकों को प्रभावी और सृजनशील होना चाहिए।